शान्ति रविवार के अवसर पर

गवाही

स्वयं को दीन/असुविधाजनक स्थिति में लाना

लेखकः डेनांग क्रिस्टियावान

2015 में, जीआईटीजे (गिरेजालिंजलि डी तनाह जावा – जवानीस मेनोनाइट इव्हेंजलिकर चर्च) के पासवानों और नाहडलातुल उलमा (एक इस्लामी संस्था) ने जेआईटीजे जेपारी चर्च में एक सभा का आयोजन किया। फोटो– डेनांग क्रिस्टियावान

नई बनाई गई एक शान्ति कलीसिया एक दूसरे के प्रति समर्पण को भी नया करने की बुलाहट देती है; उनके प्रति भी जो हमारे शत्रु हैं। सेतु का निर्माण करने से टूटे हुए सम्पर्क जुड़ जाते हैं। रिश्तों और सम्पर्कों को कायम रखे बिना शान्ति समृद्ध नहीं हो सकती। यह उस समय अनिवार्य हो जाता है जब हम उन लोगों के साथ व्यवहार करते हैं जो भिन्न विश्वास या संस्कृति के हों।

बहुत से धर्मों/आस्थाओं और दूसरी संस्कृति के लोगों के साथ सम्बन्ध में एक महत्वपूर्ण चुनौती दूसरों के बारे में वह धारणा है जिसे हम अनुमानों और पूर्वधारणाओं के आधार पर बनाते हैं। इस कारण से हम दूसरों को परमेश्वर के बालक के रूप में नहीं देख पाते। इस चुनौती का सामना करने के लिए, मुलाकात करना महत्वपूर्ण है।

अलग धर्म और संस्कृति के विचारों के बीच समझ बनाने के लिए पहुनाई एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कलीसियाओं की यह एक जिम्मेदारी है कि जहाँ कहीं सच्चा कार्य हो सकता है वहाँ अवसर उत्पन्न करें। किन्तु कलीसियाओं को एक परदेशी, एक अतिथि की आत्मिकता को भी साकार करने की आवश्यकता है, और एक कमजोर अवस्था का भी अनुभव लेना है। यह बाहर पहुँच पाने की मनोदशा प्रदान करती है। कलीसिया को अब दूसरों की मेजबानी करने के लिए ठहरने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु वह दूसरों के साथ नए प्रकार का रिश्ता बनाने के लिए पहल कर सकती है।

जेपारा में जावानीज़ मेनोनाइट चर्च अपने मुसलमान पड़ोसियों से मुलाकात करने के द्वारा ऐसा करती है। जेपारा में मेनोनाइट कुल जनसंख्या का 1 प्रतिशत हैं, जनसंख्या में अधिकांश लोग मुसलमान हैं। जेपारा में अलग अलग धर्म के लोगों के बीच में कोई शत्रुता नहीं है, परन्तु भले ही हमारा आराधना भवन मुसलमानों की एक संस्था के भवन से सिर्फ 300 मीटर की दूरी पर स्थित है, परन्तु मसीहियों और मुसलमानों के बीच कोई खास सम्बन्ध स्थापित नहीं हो सका है!

जब हमारी कलीसिया ने शान्ति कलीसिया बनने की हमारी बुलाहट को गम्भीरता से लेने का निश्चय किया, हमने अपने नगर के अन्य धर्म के लोगों के साथ सम्बन्धों का निर्माण करने का निर्णय लिया। हमारा पहला कदम यह था कि हम एक मुसलमान युवक के पास जा कर जेपारा में मेनोनाइट और मुसलमान लोगों के बीच सम्बन्ध का निर्माण करने के अपने दर्शन को बाँटे। एक साथ मिलकर हमने अपनी कला और संस्कृति से सम्बन्धित प्रस्तुतियों को तैयार किया, जिसमें हमारे समुदाय, सिर्फ अगुवे ही नहीं, भाग लेकर एक दूसरे के बारे में जान सके। हमने एक दूसरे के बारे में व्याप्त गलत धारणा को भी कम करने के लिए सभाओं की पहल की।

इसके लिए एक लम्बी प्रक्रिया की आवश्यकता थी। दूसरे के बारे में हमारे मन में पैठ चुकी शंका (या पूर्वाग्रह) के पार जा कर देख पाना कठिन था। सात वर्षों के बाद, अब हमारे मुसलमान पड़ोसियों के साथ हमारे अच्छे सम्बन्ध हैं। हम एक साथ मिलकर अर्न्तराष्ट्रीय शान्ति दिवस मनाते हैं; कलीसिया उनके वर्षगांठों के उत्सवों में शामिल होती हैं; वे हमारे क्रिसमस के आयोजनों में

शामिल होते हैं, भले ही एक *फतवा* जारी किया गया है जो इण्डोनेशिया में मसीहियों को क्रिसमस की बधाई देने से मुसलमानों को रोकता है।

अतिथि बनने के लिए दीनता की आवश्यकता होती है। हम दूसरों तक यह पूरी तरह से जाने बिना पहुँचते हैं कि वे कौन हैं। इसके लिए यह आवश्यक हो जाता है कि हम दूसरों तक सम्मान और भरोसा के साथ पहुँचे, यह विश्वास करते हुए कि जो लोग हमसे भिन्न हो सकते हैं उनसे हम कुछ सीख सकते हैं। जो दीनता या असुविधा एक अतिथि या परदेशी बनने से आती है उसके लिए हमें दूसरों की आवश्यकता होती है। इसका अर्थ यह है कि हम अहंकार और ताकत के साथ नहीं परन्तु खुलेपन और सच्चाई के साथ आते हैं, और हमें ठुकराए जाने की खुली सम्भावना हमारी दीनता/असुविधा की पहचान है।

किन्तु, इस प्रकार का तरीका, आशा लेकर आता है। एक दीन (ठुकराया जा सकने वाला) अतिथि बन कर, हम दूसरों से प्रार्थना और आशीष की मांग करते हैं, भले ही, वे हमारे शत्रु हों। यीशु ने अपने देहधारण के माध्यम से इसी स्वाभाव को प्रगट किया था। यीशु मनुष्य और परमेश्वर के बीच जिस मेलमिलाप का उपाय करता है वह संसार में उसके द्वारा स्वयं को अतिथि बनाए जाने के उदाहरण के माध्यम से सम्भव होता है। उसने अपने आप को शून्य किया और एक दास बन गया, इस प्रकार से उसने दीनता दिखाया। उसने दुखों को स्वीकार किया, जिसने उसकी कमजोरी को दर्शाया (फिलि. 2:6–8)। उसके इस स्वाभाव ने परमेश्वर के मेल को साकार होने का उपाय किया (इफि. 2:14), जो हमें आशा और साहस प्रदान करता है।

– डेनांग क्रिस्टियावान (इण्डोनेशिया) के द्वारा मेनोनाइट वर्ल्ड कॉंफ्रेंस की एक विज्ञप्ति

यह गवाही 2017 की शान्ति रविवार की आराधना का एक हिस्सा है। कुछ और गवाहियों के लिए www.mwc-cmm.org/peacesunday देखें।